[This question paper contains 6 printed pages.]

Shyama Prasad Mukherji College LIBRARY New Delhi

Your Roll No...............

B

Sr. No. of Question Paper : 798

Unique Paper Code : 12131201

Name of the Paper : Classical Sanskrit Literature (Prose)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Core, LOCF**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Unless otherwise required in a question answers should be written either in Sanskrit or in Hindi or in English, but the same medium should be used throughout the paper.
3. **All** questions are compulsory.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. अन्यथा आवश्यक न होने पर, इस प्रश्नपत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए, लेकिन सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए ।
3. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

P.T.O.

भाग – क / Part – A

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** का अनुवाद कीजिए : (5×2=10)

Translate any **two** of the following :

(क) उद्दामदर्पश्वयथुस्थगितश्रवणविवराश्चोपदिश्यमानमपि ते न शृण्वन्ति, शृण्वन्तोऽपि च गजनिमीलितेनावधीरयन्तः खेदयन्ति हितोपदेशदायिनो गुरून् ।

(ख) गुरुवचनममलमपि सलिलमिव महदुपजनयति श्रवणस्थितं शूलमभव्यस्य । इतरस्य तु करिण इव शङ्खाभरणमाननशोभासमुदयमधिकतरम् उपजनयति ।

(ग) हरति च सकलमतिमलिनमप्यन्धकारमिव दोषजातं प्रदोषममयनिशाकर इव गुरूपदेशः । प्रशमहेतुर्वयः परिणामिव पलितरुपेण शिरसिज-जालममलीकुर्वन गुणरूपेण तदेव परिणमयति ।

(घ) इयं हि सुभटखड्गमण्डलोत्पलवनविभ्रमभ्रमरी लक्ष्मीः क्षीरसागरात्पारि-जातपल्लवेभ्यो रागम् इन्दुशकलादेकान्तवक्रताम् उच्चैः श्रवसश्चंचलतां कालकूटान्मोहशक्ति मदिरायाः मदं कौस्तुभमणेर्नैष्ठुर्यम् इत्येतानि सहवासपरिचयवशात् विरहविनोदचिह्नानि गृहीत्वैवोद्गता । न ह्येवंविधमपरिचितमिह जगति किंचिदस्ति यथेयमनार्या । लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते ।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (5×2=10)

Explain with reference to the context of any **two** of the following :

(क) लतेव विटपकानध्यारोहति । गंगेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुदबुदचञ्चला ।

(ख) गन्धर्वनगरलेखा इव पश्यत एव नश्यति ।

(ग) कष्टमनञ्जनवर्तिसाध्यम् अपरम् ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्

(घ) सकलमतिमलिनमप्यन्धकारमिव दोषजातं प्रदोषसमयनिशाकर इव गुरूपदेशः

3. "वाणी बाणो बभूव" इस उक्ति के आधर पर बाणभट्ट की गद्यशैली पर विस्तृत निबन्ध लिखिए । (10)

Write a detail essay on prose style of Banabhatta on the basis of "वाणी बाणो बभूव" ।

(अथवा) **Or**

शुकनासोपदेश के आधार पर गुरू के उपदेश का महत्त्व प्रतिपादित कीजिए ।

Explain the importance of teachings of Guru according to *shuknasopdesha.*

भाग – ख / Part – B

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** का अनुवाद कीजिए : (5×2=10)

Translate any **two** of the following :

(क) देव! मयापि परिभ्रमता विन्ध्याटव्यां कोऽपि कुमारः क्षुधा तृषा च क्लिश्यन्नक्लेशार्हः क्वचित्कूपाध्याशे अष्टवर्षदेशीय दृष्टः । स च त्रासगद्गदमागत् महाभाग, क्लिष्टस्य मे क्रियतामार्य सहाय्यकम् । अस्य मे प्राणहारिणीं पिपासां प्रतिकर्तुमुदकमुदञ्चन्निह कूपे कोऽपि निष्कलो ममैकशरणभूतः पतितः ।

(ख) चित्तज्ञाननुवर्तिनोऽनर्थ्या अपि प्रियाः स्युः । दक्षिणा अपि तदभावबहिष्कृता द्वेष्या भवेयुः इति । तथापि का गतिः । अविनीतोऽपि न परित्याज्यः पितृपैतामहैरस्मादृशैदयमधिपतिः । अपरित्यजन्तोऽपि कमुपकार-मश्रूयमाणवचः सर्वथा नयज्ञस्य वसन्त्भानोरश्मकेन्द्रस्य हस्ते राज्यमिदं पतितम् ।

(ग) येप्युदिशन्ति एवमिन्द्रियाणि जेतव्यानि एवमरिषड्वर्गसत्याजयः सामादिरुपायवर्गः स्वेषु परेषु चाजस्रं प्रयोज्य । सन्धिविग्रहचिन्तयैव नेयः कालः स्वल्पोऽपि सुखस्यावकाशो न देयः ।

(घ) आगमदीपदृष्टेन खल्वध्वना सुखेन वर्तते लोकयात्रा। दिव्यं हि चक्षुर्भुतभवद्भविष्यत्सु व्यवहितविप्रदृष्टादिषु च विषयेषु शास्त्रं नामाप्रतिहतवृत्तिः। तेन हीनः सतोरप्यायतविशालयोर्लोचनयोरन्धः एव जन्तुरर्थदर्शनेष्वसामर्थ्यात्। अतो विहाय बाह्यविद्यास्वभिषङ्गमागमय दण्डनीतिं कुलविद्याम्।

5. "दण्डिनः पदलालित्यम्" उक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए महाकवि दण्डि की काव्यशैली पर निबन्ध लिखें। (11)

Discuss the meaning of "दण्डिनः पदलालित्यम्" and write an essay on poetic style of Dandin.

(अथवा) Or

विश्रुतचरितम् के अनुसार राजाओं की दिनचर्या का वर्णन कीजिए।

Explain the day by day activities of kings according to *Visrutcharitam*.

6. प्रश्न संख्या 1,2,4 के किन्हीं **पांच** रेखांकित पदों पर व्याकरणात्मक टिप्पणी कीजिए। (5)

Write Grammatical notes in any **five** underlined words in given 1, 2, and 4.

P.T.O.

भाग – ग / Part – C

7. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये : (3×3=9)

Write short notes on any **three** of the following :

बाणभट्ट, दण्डी, अम्बिकादत्त व्यास, कथा, आख्यायिका

(अथवा) Or

संस्कृत गद्य साहित्य की उत्पत्ति और विकास का विवेचन कीजिए।

Describe the origin and development of Sanskrit prose literature.

8. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिये : (5×2=10)

Write notes on any **two** of the following :

शुकसप्तति, पंचतन्त्र, हितोपदेश, वेतालपञ्चविंशतिका

BA (H) Sans II sem 2022

(2000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No. ....

Shyama Prasad Mukherji College
LIBRARY
B
New Delhi

Sr. No. of Question Paper : 817

Unique Paper Code : 12131202

Name of the Paper : Self-Management in Gita

Name of the Course : **B.A. (Hon.) CORE, LOCF**

Semester : II

Duration : 3 Hours   Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Unless otherwise required in a question answers should be written either in Sanskrit or in Hindi or in English, but the same medium should be used throughout the paper.

BA

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. अन्यथा आवश्यक न होने पर, इस प्रश्नपत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए, लेकिन सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए ।

१. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : (५×७=३५)

Explain the following :

(क) श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च ।

अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ।।

अथवा

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ।

मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ।।

(ख) तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ।

सुखसङ्गेन बन्धाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ।।

अथवा

सत्त्वं सुखे सञ्जयति रजः कर्मणि भारत ।

ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे सञ्जयत्युत ।।

(ग) यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।

इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ।।

अथवा

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते ।

तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ।।

(घ) असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ।।

अथवा

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मण: ।

शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मण: ।।

(ङ) सक्ता: कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत ।

कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसङ्ग्रहम् ।।

अथवा

कार्पण्यदोषोपहतस्वभाव:

पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेता: ।

यच्छ्रेय: स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे

शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ।।

2. भगवद्गीता के अनुसार आत्म-प्रबन्धन के स्वरूप पर एक लेख लिखिए । (11)

Write an essay on the nature of self-management according to Bhagavad Gita.

P.T.O.

OR / अथवा

इन्द्रिय, मन, बुद्धि और आत्मा का श्रेष्ठता का क्रम उदाहरण सहित समझाइए ।

Describe the hierarchy of *Indriya, Mana, Buddhi* and *Atman* with examples.

3. सात्त्विक, राजसिक एवं तामसिक आहार की विशेषताओं का वर्णन कीजिए । (11)

Describe the characteristics of *Sattvika, Rajsika* and *Tamsika* diet.

OR / अथवा

भगवद्गीता के अनुसार हम एक सन्तुलित जीवन किस प्रकार जी सकते हैं?

How can we live a balanced life according to Bhagavad Gita?

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (3×6=18)

(i) ध्यान लगाने की प्रक्रिया (Procedure of Meditation)

(ii) त्रिविध बुद्धि (Threefold Intellect)

(iii) भक्तियोग (Devotion Yoga)

(iv) मानसिक द्वन्द्व (Mental Conflict)

(v) समत्व बुद्धि (Equanimity Yoga)

(1000)

BA(H) II Sem Aug 2022